पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज

मधु शान्ति पाठ

1. ओ३म् द्यौ शान्ति आहम् द्यौ शान्ति प्रायणन्ता प्रची शान्ति महाभातनम् शाश्वन्ते विभा रथम् प्रायणन् देवम् अपामि ते कश्वा रताः माणम् द्यौ शमम् आ पा गतो रथी नक्र देवः शन ना द्यौ शना रये द्यौ मना शान्ति शान्ति देवाः।
2. ओ३म् सर्वे गङ्ग् शान्ति श्वन्धना सन्तेतना प्राणम् मह जितम् सर्वम् मानाथि चस्यो परणातणम् नराण गथो ताँसना रति रन्नामाः रणम् आ पान्तते रथम् यणा मतो सर्वा निरन्ते सर्वा नथी सर्वा नरो यातम् शनि नितारणा ते सर्वे सर्व श्वन्धनम् शान्ति शान्ति सर्वे।
3. ओ३म् सर्वे सर्व गङ्ग् तिन् गणन् तनाभि माणम् सर्वे शान्ति शान्ति शान्ति।

4. ओ३म् नरोते रो शना तक्क्छम् रोतम् तणा यथञ् चारणम् प्रति तराणि रे यमा द्यौ धरण्ये माता निरम्णा तन्यो शम नमनता यणम् आ पा महे आ आतन्ने सधानानम् आ जगतो रथम् जगतो निथा साधना देवाः रति वा गणा मणम् रस देवम् शान्ति शान्ति शान्ति।

5. ओ३म् पृथ्वे शान्ति पृथ्वी रथान्ना चाधिपता नितन्ते असि रन्नातणम् गणातो रथी औ रोषधम् नरा ताणान्ते रता मातार्णम् गर्भाचीनि गर्भच्यो गर्भच्यो गर्भानिरम् ता मा गतानि रेवता यज्ञाः चानि शम नेति पृथ्वे शान्ति शान्ति पृथ्वी शान्ति शान्ति शान्ति।

6. ओ३म् ओ३म् द्यौ सर्वे प्राम्भुना जिणस्पते जिणस्पते शान्ति वीणा वीणन् ता चक्षौ यणा रुग्णाति रथा चाश्वणौ प्रा द्यौ रति माणम् प्रादी तौ जिणस्पते जिणस्पते रौ जीणाणा पसो रति यन्नता रणम् रणा पूर्ते रो गाति रूगणा त्रि मानम् द्ये नो मानो आ पा माना धन माना चक्ष्वा माना यथा मानो आ माति अणन्ते अणन्ते अरात तक्क्छम् घो रथानि इदम् दिनो गते रथा शान्ति शान्ति वनस्पते शान्ति शान्ति सामा शान्तिः।

7. ओ३म् ब्रह्म ओ३म् ब्रह्म शान्ति ब्रह्म लो ब्रह्म लोकौ ब्रह्मे वेता प्राणच्चे यन्थान् गते रणम् ब्रह्मा चसो रथम् याणन्त्वा मणौ कल्याणा मा यनन्ते यज्ञा यनन् ताणा यज्ञा मनो धाना रयन्ते ब्रह्मा पुत्रो यजून् रासा प्राणाम् यथे यच्चानाम् भवे याणम् देवाः यणाति यञ्जणान्ते या जा यथा रावन्ने ताणाः अप्रा धनम् ब्रह्मा ता वृण ब्रह्मे लोकम् ब्रह्मा शान्ति शान्ति ब्रह्माः।

8. ओ३म् अन्तरिक्षो गङ्ग् अन्तरिक्षो शङ्गणम् शान्ति अथाम् मथा प्राशणो प्रज्ञामाणे प्रज्ञामाणे यथा चक्षे रथा मायणा षडश्चे यता प्रारथा अत्रा माणम् अन्तेरो

भोर्णम् भोरणा गोक्तिते यचा सामरेति माणा यता माणम् आ पा मा अन्तेरिक्षे रतती माणम् रजा यतन् तत्रम्भो गणाम् आ पा नतो देवाः आ पा न नया दधातो मे अतन्तेति भा मनाम् आ पा नव देवाः।

9. ओ३म् अन्तरिक्षो गङ्ग् शान्ति शान्ति शान्ति शान्ति शान्ति।

10. ओ३म् द्यौ ओ३म् द्यौ शततम् मे शान्ति यणा ता ना तौ सरे तक्ष्छो रथा भूर्णाङ्कम् आप्रितो मादम्ने तत्वश्चे यथा मीनाम् आसवनम् तानुरे यजा माणम् अपानु देवाः शान्ति शान्ति शान्ति।

11. ओ३म् अग्निष्ट शणो तग्णा अग्नाति चणम् आ पान्ति रे तग्णा तक्छवन्ति माणम् तेज धनाति रे या आ पाः२ नु देवाः आ पा मयो धणप्त नूष्धा निरन्ते अग्नि अग्नि वार्ते अग्नि चणो शान्भ्रि ना अग्ना याते मया अग्ने धी देवाः अग्ने आप्रीतो शान्ति शान्ति शान्ति शान्ति शान्तिः।

12. ओ३म् चन्द्रामसि केतो चन्द्रायणम् भरा तधाते यता मात्रा न दा सर्वो रति माणम् शान्ति शरणाते आप्रते यणा आ पान् तत्यश्च तथा गौ शणम् अप्रते यणा शान्ति द्यौ यथाश्चे यणा याणान्ते चन्द्रोसि चन्द्रमणा शान्ति शान्ति देवाः।

13. ओ३म् आत्मा रसौ आत्मा रसे आत्मा ऋधम् यौगश्वामते तना युचे तना मानम् आ पा ब्रह्म ईज्ञते यशाम् ब्रह्ममणा यथे यम्मा माते रथी यन्नाते धनम् आचाराम् आचारमये आत्मा रयीणाम् आ पा नी रेवणम् आत्मा निदम् शान्ति शान्ति शान्तिः देहि।

14. ओ३म् नरा ओ३म् नराति जणौ यशान्ते सम्भवति माणम् आपान्ते तक्ष्छ तन्नः आ पा चकरा यथश्चकरो ऋजन्ते माणाम् आपम् आपम् गौ गृहीताम्

मानो धा मानो धा नमन्ते रचा रान्धि नो माता गृते आ धान्ति नो यशा नु रये नि नराः शान्ति शान्ति शान्तिः२।

15. ओ३म् भणा सर्वे यतम् सर्वे मतम् सर्वे अपान् सर्वे आमाणा सर्वे आत्मा सर्वे तदान्ते ब्रह्मा तश्चे यमा सर्वे यमा माणा मा यथम् सर्वे गणा शान्ति शान्ति शान्तिः।

16. ओ३म् शन्नम् शान्ति ओ३म् शन्नो शान्ति सामा निराति राणो यतन् तक्ष्छो गृता निधानि रौ धामन्ते कान्ति रणा याता मया गेतो मया देवम् दधा निके रणम् मया आ पा मये शगङ्गधा मणा रसि वो यात्मानिधा सर्वा यथम् पूर्णम् अग्रा मनयो याति रात्र प्रचेयी सा मा शान्ति शान्तिः।

व्याख्याःश्रृङ्गी ऋषि कृष्ण दत्त जी महाराज

पूज्य महानन्द जीः गुरु जी! कल हमारी एक इच्छा ओर है, कि कल आप **मधु शान्ति** पाठ करें।

पूज्यपाद गुरुदेवः अच्छा बेटा! तो कल का कल देखा जाएगा। तो भाई! कल आएगा, तो उच्चारण कर देना । अच्छा देखा जाएगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः तो मुनिवरों! महानन्द जी अब उच्चारण कर रहे हैं, कि **मधु शान्ति** पाठ कल होना चाहिए। परन्तु यदि समय मिला तो **मधु शान्ति** पाठ करेंगे और नहीं मिला, तो नहीं करेंगे। अच्छा! अब वेदों का पाठ होगा, इसके पश्चात हमारा व्यख्यान समाप्त हो जाएगा।

महानन्द जी का तो कल यह प्रश्न था, कि **मधु शान्ति** पाठ हो जाएं, परन्तु **मधु शान्ति** पाठ आज नही करेंगे कल या किसी द्वितीय स्थान में ही देखेंगे, क्योंकि **मधु शान्ति** पाठ बहुत अधिक हैं। अब हमारा वेदों का पाठ होगा।

पूज्य महानन्द जीः भगवन! आप तो हमारी इच्छा किसी काल में भी पूर्ण नही किया करते।

पूज्यपाद गुरुदेवः अरे, देखा जाएगा, कल।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन!।

पूज्यपाद गुरुदेवः जीते रहो, मुनिवरों! आज कैसा **मधुर** समय आया, जिस सौन्दर्य समय में **मधुर** वेदपाठ कर रहे थे। प्रातःकाल का समय तो बेटा! हमें किसी किसी काल में प्राप्त होता है। आज प्रातःकाल में **मधु शान्ति** का पाठ कर रहे थे और प्रभु

से याचना कर रहे थे कि हे विष्णु! आप **मधु** हैं। आपका बनाया हुआ संसार भी **मधु** है, रहे हम प्राणी जो जीव भाव बने बैठे हैं, हमारे हृदयों में नाना त्रुटियां हैं, चिन्ताएं हैं। हे विधाता! आप तो विष्णु हैं, शेष नाग पर शयन करने वाले हैं। हे भगवन! हमारा वह कौन सा काल आएगा। जब हम भी शेषनाग शैय्या पर शयन करने वाले बनेंगे। हम मानव तो अवश्य हैं, परन्तु इतने अभागे नहीं, यदि अभागे होते तो आपके नियम के अनुकूल हमें यह मानव योनि प्राप्त न होती।

हमारा हृदय तो चाहता है कि हम **शान्ति**दायक बन जाएं, शेषनाग पर स्थित हो जाएं, इससे भी ऊँचा स्थान हो जाएं, परन्तु क्या करें, यह स्थिति तो उसी काल में आएगी जब विधाता! आपके बनाएं हुए सर्वज्ञ पदार्थ, यह पांच भौतिक तन्मात्राएं, हमारे शरीर में **शान्ति**दायक बन करके कार्य करेंगी। परन्तु क्या करें, इतने महान दुर्भागी बने बैठे हैं। विधाता! यह आपका तो कोई दोष नहीं, हमारे कर्मों का ही दोष है, जो आपके आङ्गन में नहीं आ रहे हैं। अभागे इसलिए हैं, कि आपके नियन्त्रण में कार्य नहीं करते। हे विधाता! जब तक आपकी करूणा न होगी, दया न होगी तब तक हम कदापि भी आपके आङ्गन में न आ सकेंगे। हे विधाता! हमारे हृदय में **शान्ति** उत्पन्न करो, आज हम नास्तिक बनते जा रहे हैं, नास्तिक से आस्तिक बनाओ।

आज हम क्या करें, व्याकुल ही होना पड़ रहा है। हम तो अभागे नहीं थे, परन्तु क्या करें, आपके इस प्राकृतिक विचित्र खेल ने, हमें इतना तुच्छ बना दिया है। हे प्रभु! जब आपकी करूणा हो जाती है, ब्रह्मचारी बन जाते हैं, हमारा जीवन उच्च विलक्षण बन जाता है। इसलिए हे विधाता! दया करो, हमारी आत्मा, हमारा अन्तःकरण सब कुछ आपके आधीन है। प्रकृति के यह नाना आवेश, नाना चमत्कार हमारे समक्ष आते हैं, तो हम इतने तुच्छ बन जाते हैं, आत्मा में इतनी दुर्बलता आ

जाती है, कि आपसे विपरीत चलने लगते हैं, यह सूक्ष्मता तो है हममें। जब विधाता! आपकी करूणा हो जाएगी, तो महान बन जाएंगे।

आज मानव इसी विचार पर न बैठा रहे, कि परमात्मा की कृपा होंगी, तो अवश्य होगी। परन्तु परमात्मा से ही नित्य प्रति प्रार्थना करते रहो, कि हे विधाता! आपका जो यह वायु मण्डल है, सूर्य मण्डल है, चन्द्र मण्डल है और नाना लोक है, सबमें **शान्ति** हो, मार्धुता हो, जिससे भगवन! हम आपके नियन्त्रण में, आपके अनुकूल कार्य कर सके।

प्रातःकाल का सूर्य उदय हो रहा है। तीनों लोकों को प्रकाशमान कर रहा है, कितना उदार है, कितना पवित्र है। उसकी कान्ति में अपनी कान्ति लगा लो। जैसे बुद्धिमान ब्राह्मण त्रिविद्या का प्रकाश देता है, इसी प्रकार यह सूर्य भी त्रिविद्या का प्रकाश देता है, जिससे बुद्धि में भी **शान्ति**, हृदय में भी **शान्ति**, मन में भी **शान्ति**, सर्वत्र **शान्ति** ही **शान्ति** प्राप्त हो जाती है। जिस मानव के हृदय में **शान्ति** का भाव आ गया, उसका क्यों न उत्थान होगा, क्यों न वह परमात्मा के आङ्गन में, माता दुर्गे की गोद में, या गायत्री माता की गोद में चला जाएगा।

हे महान सूर्य! तू **शान्ति**दायक है, तू हमें प्रकाश देने वाला है, प्रातः से सायं काल तक तपता है और इस संसार को तपायमान कर देता है। हे विधाता! ऐसी तपस न दे, जिससे अकाल पड़ जाएं, ऐसा विराट रूप न धर, जिससे संसार नष्ट हो जाएं। आप तो देव है, प्रभु ने सविता सत्ता दी है, उसका सदुपयोग करो, आपके महान तेज में उषा किरणों में हमारा जीवन ऐसा महान बन जाऐगा, कि जैसे आप तपायमान हो रहे हो, ऐसे ही हम इस संसार को तपायमान कर सकें, जब तक हममें आपके गुण न आएंगे, हम किसी मानव को तपायमान न कर सकेंगे, यही आपकी **मधु**रता है, जिसको प्राप्त हो जाती है, वह इस लोक और परलोक दोनों में

महान बन जाते है। जिस मानव के हृदय में **शान्ति** नहीं, जो नाना प्रकार के सङ्कल्प विकल्प में लगा रहता है, वह मानव यहां भी दुःखी और परलोक जाने पर भी दुखी होता है। हे प्रभु! जिस पर आप की दया हो गई, वह मानव शक्ति को प्राप्त हो जाता है।

हे विधाता! आपका यह महान वायु भी हमारे लिए **शान्ति**दायक हो। जब हमारा आत्मा इस शरीर को त्याग कर, वायु मण्डल में जाएं, तो **शान्ति**दायक वायु हमें आकर्षण कर लेवे, हमें **शान्ति** पाठ पढ़ावे, जब **शान्ति** पाठ हमारे समक्ष आएगा, तो उसे पाकर के हम प्राणों में लय हो जाएंगे, यह प्राण हमारे जीवन को उत्सव देने वाला है।

हे देव! हे सखा! वेदों ने आपको मित्र कहा है, जो आपसे मित्रता कर लेता है, उसे संसार में किसी मानव को मित्र बनाने की आवश्यकता नहीं, आप ऐसे मित्र हैं, कि हमारे हृदय की सब इच्छाएं पूर्ण होती रहती है। परन्तु प्रभु तो अनन्त है, हम अनन्त नहीं। प्रभु को मित्र कौन बनाएगा? मुनिवरों! आज मानव का यह केवल सीमित विचार है। अरे, सीमित विचार न बनाओ। यह आत्मा भी तो अनन्त है, जैसा परमात्मा अनन्त है। आत्मा भी तो उसके प्रवाह में जाकर अनन्त बन जाता है। जब उसको मित्र बना लेता है, तो उसके गुण उसमें आ जाते हैं। जब मित्र के गुण आ जाते है तो जैसा मित्र अनन्त है, वैसा ही मित्र भाव भी अनन्त बन जाता है। उसको वही मित्र बनाएगा, जो महान इस प्रकृति के आवेशों को अपने स्वार्थो को और अपनी क्लिष्टताओं को त्याग देता है, प्रभु में महान श्रद्धा हो जाती है, कि प्रभु मेरा मित्र है।

आज मानव यह विचार लगाए बैठा है कि प्रभु को कौन मित्र बनाएगा। अरे, प्रभु को मित्र बनाएगा, जो मित्र के योग्य है। अरे, मित्र के योग्य तो यह आत्मा है,

आज नाना प्रकार के प्रश्न पाते हैं, परन्तु सब का उत्तर केवल यह है कि प्रभु ऐसा महान है, पवित्र मित्र है, कि उसको महान मित्र विचारने से मानव की कान्ति, मानव का विश्वास, ऐसा विचित्र बन जाएगा, कि यह संसार उसके लिए तुच्छ बन जाएगा। यह आत्मा **मधु**र बन करके, उस प्रभु के आङ्गन में, उस गायत्री माता की गोद में चला जाएगा, जहां जाकर के कोई दुर्गुण नहीं रहता। ऐसा पवित्र आत्मा बन जाता है, कि वह प्रभु आपसे आप, अपने आङ्गन में धारण कर लेता है।

आज मानव नास्तिकता को क्यों प्राप्त हो जाता है? उसका प्रभु में विश्वास क्यों नहीं होता?

मुनिवरों! वह इसलिए नहीं होता, क्योंकि वह भौतिकता में लगा हुआ है। प्रकृति के आवेशों में आ करके, उसकी बुद्धि नास्तिक बन गई हैं। उसने अपने जीवन को समाप्त कर लिया है। मानव ने यह नहीं जाना कि तू नास्तिक हो गया है। नास्तिक क्या पदार्थ है? नास्तिकता के कौन से तत्त्व तेरे द्वारा है? तेरा हृदय तो नास्तिक नहीं हुआ है, तेरा आत्मा तो उस परमात्मा का पुत्र बना बैठा है, आत्मा तो नास्तिक नहीं। अरे, तेरा मन का सङ्कल्प इतना तुच्छ बन गया है, कि संसार के ऐसे ऐसे तत्त्वों को बटोर कर, तुम्हारे समक्ष नियुक्त कर देता है। जिसके द्वारा मन का सङ्कल्प ऐसा बन गया है कि भौतिकता में तूने कभी परलोक नहीं विचारा है। तूने अपना जीवन यहीं तक सीमित बना लिया है। इस सृष्टि को यहीं तक सीमित मान लिया है। यह मान करके तेरे हृदय में नास्तिकता आ गई है। अरे, यह नास्तिकता किस काल तक रहेगी? उस काल तक रहेगी, जब तक इन मन के आवेशों में रहोगे। जब मन से इन प्रकृति के आवेशों को पृथक कर दोगे, उसी काल में आस्तिकता आ जाएगी। नास्तिकता वाला पदार्थ तो मन है। आत्मा तो अपने पिता परमात्मा का पुत्र है उसमें तो नास्तिकता आती ही नहीं।

मुनिवरों! आगे प्रश्न आता है, कि यह आत्मा हृदय में रहता है। इसी की ही रश्मियां मन को चला रही हैं। मन तो जड़ पदार्थ है। यदि जड़ को नास्तिकता आ गई, तो कोई बात नहीं, अरे, जड़ को तो नास्तिकता आती ही नहीं। तो क्या यह विचारें, कि आत्मा को नास्तिकता, आ गई? नही नही, आत्मा को नास्तिकता नही आती। बेटा! जैसे सूर्य का प्रकाश आ रहा है, हम सूर्य के प्रकाश का दुरूपयोग करे या सदुपयोग करें इसमें सूर्य का कोई दोष नहीं इसमें हमारे संस्कारों का दोष हैं। सूर्य उदय होने से पूर्व अपने स्थान से पृथक हो, नित्य कर्म स्नान आदि से निवृत्त हो करके, उस सूर्य से, उस आदित्य से उस महान ब्रह्मचर्यता को उस बुद्धिदायक तेज को प्राप्त करते है, तो यह है उसका सदुपयोग। और यदि सूर्य उदय से पूर्व हम अपने स्थानों से पृथक नहीं होते, निद्रा में रहते हैं, नेत्रों का सम्बन्ध सूर्य की किरणों से नहीं करते, बुद्धिदायक तेज को धारण नहीं करते, तो यह है इसका दुरूपयोग। इसमें सूर्य का कोई दोष नहीं, इसमें हमारे आलस्य और प्रकृति के आवेशों का दोष है। इसीलिए मुनिवरो! यह जो आत्मा है, यह तो महान है, यह तो रश्मियां देने वाला है। परन्तु हमारे अन्तःकरण में ऐसे संस्कार जमे हुए हैं जिन संस्कारों से हम आत्मा के प्रकाश का दुरूपयोग करते हैं। अपने इन तुच्छ संस्कारों के अनुकूल स्वार्थ के वशीभूत हमारा आत्मा कष्ट को प्राप्त हो जाता है। आज हमें आत्मा को ऊँचा बनाना है। अपने मन को इन प्राकृतिक आवेशों से पृथक प्रभु चिन्तन में लगाना है, नास्तिकता को त्यागना है।

मुनिवरों! जब मानव में नास्तिकता आ जाती है तो उसकी जीवन नौका, उस नौका की तरह हो जाती है जो गंगा में जा रही है, जो न इस पार पहुँच पा रही है, और न उस पार पहुँच रही है। और मध्य में ही डूबकर समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार जिस मानव में नास्तिकता आ गई है, वह न तो इतना क्लिष्ट बना, न दुराचारी

बना, परन्तु भौतिकता में पहुँच गया है। और न वह इतना उच्च है, कि वह आत्मा की राश्मियों को अपने आङ्गन में धारण करने वाला हो। मध्यम में पहुँच गया है, और नास्तिकता आ गई। अब तेरा अन्तिम काल आ गया हैं, अब यह तेरी जीवन नौका डूबने वाली है। अगले जन्मों में वह योनि प्राप्त होगी, जहां परमात्मा के नाम लेने से तो गया, आत्मा का प्रकाश भी तेरे समक्ष न आवेगा।

मुनिवरों! नास्तिक किसको कहते हैं? आज मानव कहता है कि नास्तिक उसको कहते हैं, जो परमात्मा का चिन्तन नहीं करता है। हम उसको नास्तिक नहीं कहा करते। अरे, नास्तिक उसको कहते हैं, जो अपने कण्ठ से ऊपर ऊपर परमात्मा का चिन्तन कर रहा है और हृदय में महान क्लिष्टता है। अन्तःकरण में ऐसे तुच्छ संस्कार, कि कोई कन्या हमारे नेत्रों के समक्ष आई, तो हृदय से यह नहीं विचारा कि यह कन्या मेरी माता है, मेरी भौजाई है। परन्तु क्लिष्ट भावनाओं से उसे पत्नी के रूप में विचारता है, और चाहता है कि यह मेरे द्वारा आ जाएं। दूसरों का द्रव्य मेरे द्वारा आ जाएं। दूसरों की निन्दा करता रहूँ, और प्रभु का चिन्तन भी करता रहूँ वह मुनिवरों! सबसे बड़ा नास्तिक है।

ऐसे नास्तिकों के लिए परमात्मा से प्रार्थना किया करते है, कि हे प्रभु! ऐसे नास्तिकों से हमें बचा, ऐसा नास्तिक नहीं चाहिए, जो आपका चिन्तन भी कर रहा है, और आपकी अमृती आड़ में महान पाप करने वाला हो। ऐसे महान नास्तिक से विधाता! हमें बचाना। इस नास्तिक से तो वहीं नास्तिक सुन्दर है, जो यह कह रहा है, कि परमात्मा नहीं है, सृष्टि प्रारम्भ हुई है और आप ही बन गई है। अरे, यह वाक्य उन महान पापी नास्तिकों से जो परमात्मा के आङ्गन में आकर के अपना महान स्वार्थ पूर्ण कर रहे हैं, करोड़ों गुणे सुन्दर माने गएं हैं। परन्तु यह नास्तिक भी सुन्दर नहीं, जो यह कहते हैं, परमात्मा को न मानकर मानव कहां जाएगा, कौन से लोक

में जाएगा, माता पिता के **मधु** भावों से यह हमारा गृह आश्रम चल रहा है, यह जो संसार है, यह भी परमात्मा का बनाया हुआ है, जड़ पदार्थ जैसे अग्नि है, जल है, वायु है, पृथ्वी है इनको मिलाने के लिए कोई न कोई सत्ता अवश्य होती है, जब तक मानव ने यह नहीं जाना, तब तक यह आस्तिकता नहीं जानी।

मुनिवरों! आज हमारा **मधु**र वेद क्या कह रहा है। परमात्मा का चिन्तन हृदय से करो। हृदय पवित्र हो जाएगा। आज तुम परमात्मा का चिन्तन कर रहे हो परन्तु व्यवहार तुच्छ बन गएं हैं। दूसरे जीवों को भक्षण करते हो, यह तुम्हारी नास्तिकता है, यह आस्तिकता नहीं। हमारे आचार्यों ने तो कहा है कि ऐसे नास्तिक तो संसार में एक प्रकार के भार हुआ करते हैं। आज पृथ्वी पर भार नहीं बनना है। अपने जीवन को हर प्रकार से ऊँचा बनाना है। अपने आहार व्यवहारों को ऊँचा बनाना है। इस विषय में महानन्द जी सायं काल को ऊँचा व्याख्यान देंगे। हम तो कल उच्चारण कर चुके हैं। हमारा तो **मधु** पाठ का व्याख्यान चल रहा है।

मुनिवरों! आज वेद पाठ के पश्चात प्रभु की वह प्रार्थना की, जिसे पूर्व के ऋषि मण्डल विराजमान होकर किया करते थे। प्रभु से कहा करते थे कि विधाता! आपने कैसी वसन्त ऋतु बनाई, जिसमें मानव का आत्मा उत्सव मनाता है, हर काल में जब ऋतु परिवर्तन होता है, तो मानव का हृदय उत्सव मनाता है। परन्तु जो मानव पापी होता है, ब्रह्मचर्य सत्ता को नष्ट करने वाला होता है, उसके हृदय में इतने तुच्छ संस्कार मल विक्षेप आवरण आ जाते हैं, कि जब उसका ऋतु काल आता है, तो कहता है कि हे परमात्मन! मेरे जीवन को समाप्त कर दो। परन्तु ऋषि मण्डल कहता है, कि प्रत्येक ऋतु में हमें उत्सव मिलता रहे। प्रत्येक ऋतु में उस मानव का हृदय नीरोग, स्वस्थ रहता है, जो अपने ब्रह्मचर्य को ऊँचा बनाता है, उसकी रक्षा करता है, वह ऋषिता को प्राप्त हो जाता है। हम इस महान प्रार्थना का अधिक

आदेश न दे सके, अब तो हम अपने आदेशों को समाप्त करने वाले हैं क्योंकि आज प्रभु की बहुत याचना की है।

मुनिवरों! अन्त में वेद ने प्रभु को नेति नेति कहा हैं आज हमें विचारना है कि प्रभु को नेति क्यों कहते हैं? वेद नाम प्रकाश का है, जब यह प्रकाश हमारे में प्रविष्ट हो जाता है, तो यह आत्मा उस प्रकाश को पा करके उस महान नेति प्रकाश में लय हो जाता हैं। प्रभु वह प्रकाश है, जो इन वेदों का प्रकाश करने वाला है। जो प्रकाश को भी प्रकाशित करने वाला हो, वह प्रकाश और भी महान माना जाएगा। जैसे एक गृह में विद्युत प्रकाश दे रही है, वह विद्युत कहां से आई? वह महान सूर्य, चन्द्रमा, वायु, जल, इन सब ही के संयोग से प्रकाशित हुई और वैज्ञानिकों ने उसे अपने अधिकार में लिया, गृह से प्रकाश होने लगा। कोई मानव कह रहा है कि विद्युत महान है परन्तु वह परमात्मा इतना महान है, जो सूर्य, चन्द्रमा, वायु, जल इन सबको अपनी सविता देकर के इस विद्युत को उत्पन्न किया है। तो मुनिवरों! जो मानव जीवन के लिए वेद विद्या प्रकाशित करने वाला हो, वह महान है, वह प्रकाश का भी प्रकाश है, इसलिए वेद ने नेति नेति कहा है। क्योंकि वेद के प्रकाश को अच्छी प्रकार पाने के पश्चात, उसे अपने में धारण करने वाला बन जाता है। अहा! यह प्रकाश किसके लिए दिया है? आत्मा के लिए दिया है। और कहा है कि हे आत्मा! तू संसार में चल और ऊँचा कार्य कर। तू प्रकाशवान बन। जब तू महान प्रकाशवान बन जाएगा, तू मेरे में लय हो जाएगा और मेरे में प्राप्त हो करके, संसार के नाना दुःखों से पृथक हो जाएगा। जैसे मैं शेषनाग की शैय्या पर स्थिर हो रहा हूँ, हे आत्मा! तू भी शेष नाग की शैय्या स्थिर हो जाएगा और लक्ष्मी तेरे चरणों में ओत प्रोत हो जाएगी।

मुनिवरों! यह शेष नाग हमारा मन है, जिसमें यह काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि हमें डसने वाले विष हैं, इन सबकी नेती बना करके, सबका सब शेष बन करके मन में लय हो जाएगा और आत्मा के अनुकूल कार्य करने लगेगा। अर्थात जब मन अपने इन काम, क्रोध, मद, लाभ मोह आदि पर विजय पा लेता है और आत्मा के आधीन कार्य करने लगता है तो वही आत्मा का शेष नाम की शैय्या पर स्थिर होना कहा जाता है।

कैसा यह प्रातःकाल का **मधु** आदेश, जो आज कण्ठस्थ आया। बेटा! **मधु** पाठ तो न जाने क्या क्या कह रहा था। समय मिलेगा तो बेटा! किसी द्वितीय काल में आदेश देंगे। आज तो अब हमारा आदेश समाप्त होने जा रहा है। आज मानव को विचारना चाहिए, अपने हृदय को आस्तिक बनाना चाहिए। प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या को अपने हृदय से प्रभु का चिन्तन करना चाहिए।

मुनिवरों! अब हमारा यह आदेश समाप्त हो गया है, हमारे आदेशों का मुख्य अभिप्राय यही था, कि मानव को उच्च बनने के लिए प्रभु की याचना करनी चाहिए, और माता गायत्री की गोद में जाना चाहिए। यह हमारा आदेश था। यह प्रातः काल था। प्रातः काल में तो बेटा! कुछ नहीं किया। समय था, जब था, अब क्या है। वह काल ऐसा था, जिस काल में, ऋषियों का समूह, ऋषियों का मण्डल, विराजमान होता था और जब जटा पाठ में, **मधु** पाठ किया जाता था, तो बेटा! मार्ग में पक्षीगण भी शान्त हो जाते थे। सिंह तक आकर विराजमान हो जाते थे, और **मधु** पाठ को पाते थे। आज तो उच्चारण करने का कोई समय ही नहीं। अब यह आदेश समाप्त हो गया है। कुछ **शान्ति** पाठ होगा।

जितेन्द्र बंसल